तत्त्व (*Essence*) और वास्तविकता (*Existence*)

देकार्त की तात्त्विक युक्ति को स्पष्ट करने के लिए तत्त्व (essence) और वास्तविकता के अरस्तूय, भेद का उल्लेख करना अनिवार्य मालूम देता है। *सुकरात* ने ही कहा था कि किसी पद को समझने के लिए उसकी परिभाषा जाननी चाहिए। किसी भी पद की परिभाषा तभी जानी जा सकती है जब हम उस पद के सन्दर्भ में उसके सभी सारगुणों को स्पष्ट करें। उदाहरणार्थ न्याय को जानने के लिए न्याय पद के सारगुणों का उल्लेख करना आवश्यक समझना चाहिए। इसी प्रकार मनुष्य के विषय में ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें मनुष्य के सारगुण को जानना चाहिए। मनुष्य का परम्परागत सारगुण विवेकशीलता तथा पशुता समझा जाता है। परन्तु क्या किसी पद को परिभाषित करने पर आवश्यक है कि उस पद के अनुरूप वास्तविक वस्तु भी हों? हम परिभाषित कर सकते हैं कि एक शृगडी वह साँढ़ है जिसके केवल एक ही सींग हो। क्या इसके अनुरूप एक शृगडी पशु वास्तविक माना जायगा? यहाँ स्पष्ट हो जाता है कि सारगुण और वास्तविकता दो भिन्न और पृथक् बातें हैं। यही नहीं वास्तविकता को गुण अथवा विधेय (quality of predicate) नहीं ही कहा जा सकता है। यदि हम कहें कि त्रिभुज वह समान धरातल का आकार है जो तीन सरल रेखाओं से घिरा हो, तो सम्भव है कि इसके अनुरूप कोई भी त्रिभुज न हो। अतः, वास्तविक होना किसी भी परिभाषा के अन्तर्गत नहीं आता है। यही कारण है कि वास्तविकता (existence) को किसी भी पथ का सारगुण नहीं समझा जाता है। चूँकि साधारणतया विधेय अभिकथन के उद्देश्य के गुण का बोध कराता है, इसलिए विधेय का 'गुण' कहा जाता है। चूँकि वास्तविकता को सारगुण(तत्त्व) नहीं कहा जाता है, यही कारण है कि वास्तविकता को सार्थक अभिकथन का विधेय नहीं कहा जाता है। इसलिए यदि ईश्वर के तत्त्व को जान भी लें, अर्थात् ईश्वर पूर्ण सत्ता है, तो इस तत्त्व से ईश्वर की वास्तविकता सिद्ध नहीं मानी जाएगी।

देकार्त की ईश्वर-सम्बन्धी तात्त्विक युक्ति की प्रारम्भ से ही आलोचना होती आई है। *काण्ट* ने इस युक्ति की आलोचना करते समय बताया है कि प्रत्यय और अस्तित्व में बड़ा भेद है और केवल प्रत्यय के आधार पर किसी वस्तु की वास्तविकता सिद्ध नहीं की जा सकती है। मैं सोच सकता हूँ कि इस समय मेरी जेब में 100 रु० के विचार कर सकने की क्षमता से सिद्ध नहीं होता है कि वास्तव में मेरी जेब में 100 रु० हैं। यदि विचार-मात्र से वास्तविकता हो जाती तो भिखारी महलों में रहते और लँगड़े हिमालय की चोटी पर पहुँच जाते। हमारा विचार कितना ही संगत और उच्च क्यों न हो, इसके अनुरूप वास्तविकता का रहना सिद्ध नहीं होता है। अतः पूर्ण सत्ता की वास्तविकता सिद्ध नहीं होती। *काण्ट* की यह आलोचना यथास्थान विस्तारपूर्वक देखी जायगी। काण्टीय आलोचना के विरुद्ध कुछ लोगों ने *देकार्त* के मत की पुष्टि की है। उनका कहना है कि *काण्ट* की यह आलोचना विचार मात्र से वास्तविकता सिद्ध नहीं होती, साधारण वस्तुओं में लागू होती है। यदि कोई कुर्सी, मेज, किताब इत्यादि के अस्तित्व को उनकी भावना से प्राप्त करना चाहे

---

* "Whatever we clearly and distinctly perceive to belong to the true and the unaltcrable nature of anything, to its essence, its form, that may be predicated of it. Now we find on investigation. God, that existence belongs to his true and unalterable nature and therefore, we may legitimately predicate existence of God."

Scanned with CamScanner

तो इन प्रत्यालोचकों का कहना है कि इन वस्तुओं के प्रसंग में *काण्ट* की आपत्ति सही है। परन्तु *काण्ट* की आपत्ति *पूर्ण सत्ता* के सम्बन्ध में ठीक नहीं है, क्योंकि यदि पूर्ण सत्ता की भावना केवल कल्पना-मात्र हो जाय तो विचार और परम सत्ता के बीच ऐसी खाई हो जाती है कि विचार के द्वारा सत्ता का जानना असम्भव हो जाएगा। अतः, आलोचकों का कहना है कि पूर्ण सत्ता की भावना और उसकी वास्तविकता अवियोज्य रीति से लिपटी है और यहाँ भावना से वास्तविकता सिद्ध मानी जा सकती है।

देकार्त के अनुसार यदि ईश्वर है तो धोखा नहीं दे सकता है। ऐसा नहीं हो सकता है कि मानव जिस बात को स्पष्ट तथा परिस्पष्ट जानें वह मिथ्या हो। यदि ऐसी बात हो तो मानव का सृजनहार ईश्वर धोखेबाज ठहरेगा, परन्तु ईश्वर पूर्ण होने के कारण सत्यनिष्ठ (veracious) है। अतः, हम पाते हैं कि ईश्वर की सत्यनिष्ठा पर स्पष्टता तथा परिस्पष्टता की ज्ञान-कसौटी आधारित है और इस ज्ञान-कसौटी से ही सब प्रकार के ज्ञान की स्थापना होती है। इसलिए *देकार्त* का दर्शन ईश्वर की सत्यनिष्ठा पर आधारित है।

इसलिए कहा गया है कि देकार्तीय दर्शन ईश्वर-केन्द्रित (theocentric) है। परन्तु फिर भी *देकार्त* का ईश्वर-केन्द्रित दर्शन, मध्ययुगीन दर्शन से भिन्न है, जो यथार्थ में ईश्वर केन्द्रित था। मध्ययुग में ईश्वर-धर्म-विश्वास का पात्र था, परन्तु *देकार्त* का ईश्वर तत्त्वमीमांसा की सत्ता है। देकार्तीय ईश्वर की न पूजा होती है और न इसका कोई पुजारी है। *देकार्त* की विचार-परम्परा के अनुसार विश्व बौद्धिक रचना है, जिसे मानव अपनी बुद्धि से जान सकता है। अतः, *देकार्त* ने ईश्वर की सत्यनिष्ठता से मानव-ज्ञान क्षमता का बोध कराया है।*

यहाँ पर आलोचकों का कहना है कि *देकार्त* की युक्ति में चक्रानुमान (arguing in a circle) पाया जाता है; क्योंकि ज्ञान कसौटी के आधार पर पूर्ण ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध किया गया है और फिर पूर्ण ईश्वर के आधार पर ज्ञान-कसौटी की सत्यता सिद्ध की गई है। परन्तु इस आलोचना का प्रत्युत्तर करते हुए *देकार्त* ने बताया है कि यहाँ कोई चक्रानुमान नहीं है। ईश्वर का अस्तित्व तत्त्वमीमांसा की भेंट है और ज्ञान-कसौटी ज्ञान-मीमांसा की वस्तु है। हमारे ज्ञान की वस्तु हमारे ज्ञान से पहले पाई जाती है और ज्ञान-वस्तु मानव-ज्ञान से उत्पन्न नहीं होती है। परन्तु किसी भी वस्तु को जानने के लिए मानव को अपने ज्ञान को सहारा लेना पड़ता है। अतः, ज्ञान-प्राप्ति के दृष्टिकोण से ज्ञान-कसौटी पहले आती है और जब ज्ञान-कसौटी सिद्ध हो जाती है तब ज्ञान-वस्तु को स्थिर किया जाता है। इसी तर्क के अनुसार ज्ञान-कसौटी पहले आई है और तब इसके द्वारा पूर्ण ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध किया गया है। ज्ञान से विश्व-तत्त्व सिद्ध नहीं होता है, पर परम तत्त्व से ही मानव-ज्ञान और सभी वस्तुओं की सत्यता सिद्ध होती है। अतः, ज्ञान-कसौटी का भी आधार तात्त्विक सत्ता है। इस प्रकार पूर्ण ईश्वर की सत्ता ही अन्तिम ज्ञान-कसौटी का आधार है। इसलिए ईश्वर सत्ता-सम्बन्धी ज्ञान की प्राप्ति में ज्ञान-कसौटी पहले आती है और तब इस ज्ञान-कसौटी की तात्त्विक सत्ता सिद्ध करने के लिए पूर्ण ईश्वर की मदद ली जाती है। अतः, यहाँ किसी प्रकार का चक्रानुमान नहीं है।

देकार्त की उपर्युक्त युक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि आप बुद्धिवादी अवश्य थे, पर आप प्रत्ययवादी नहीं थे। आपके अनुसार वस्तु का अस्तित्व मानव-ज्ञान से स्वतंत्र है। ईश्वर और अन्य तात्त्विक सत्ताएँ मानव-ज्ञान से परे तथा स्वतंत्र हैं। इसलिए ज्ञान-मीमांसा तत्त्व-मीमांसा पर निर्भर करती है और यह वस्तुवाद (realism) का एक मौलिक सिद्धान्त है, परन्तु प्रत्ययवाद के अनुसार तत्त्व-मीमांसा ज्ञान-मीमांसा पर आधारित होती है।

यद्यपि देकार्तीय ईश्वर मध्ययुगीन धर्म-विश्वास का ईश्वर है, फिर भी इसका प्रत्यय स्पष्ट

---

* Ultimately the veracity of God means that the world is rational which the human intellect can penetrate.

Scanned with CamScanner

नहीं है। जब *देकार्त* कहते हैं कि सभी वस्तुएँ ईश्वर पर निर्भर करती हैं तो यहाँ ईश्वर परम सत्ता (absolute) के रूप में आता है। फिर जब *देकार्त* बताते हैं कि ईश्वर पूर्ण तथा सत्यनिष्ठ है तो इसमें ईसाई धर्म के देवता की झलक आ जाती है। अतः, ईश्वर-सम्बन्धी अनिश्चित तथा अनेकार्थ शब्दों के प्रयोग से देकार्त के दर्शन में गड़बड़ी आ गयी है।

Scanned with CamScanner